आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 4/अंक 3/सितंबर 2024
Received:20/09/2024; Accepted:22/09/2024; Published:26/09/2024

स्त्री सशक्तिकरण:सामाजिक सन्दर्भ

(प्रातिनिधिक समकालीन हिन्दी कवितओं के सन्दर्भ में)

[1]नमिता.के, [2]डॉ. प्रभुसेन

[1]शोधार्थी, [2]शोध निदेशक

कर्नाटक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय

हिन्दी विभाग

मैसूरु

[1]नमिता.के, [2]डॉ. प्रभुसेन,**स्त्री सशक्तिकरण:सामाजिक सन्दर्भ** , आखर हिंदी पत्रिका, खंड 4/अंक 3/सितंबर 2024, (233-162)

अनुरूपी लेखक - [1]नमिता.के, [2]डॉ. प्रभुसेन, [1]शोधार्थी, [2]शोध निदेशक,कर्नाटक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग, मैसूरु।

मुख्य शब्द :

स्त्री सशक्तिकरण, भरतीय संस्कृति, पितृ सत्तात्मक समाज, सबला, सकारात्मकता, जागृत, समानता, परिवर्तन, स्वतंत्रता, आत्मनिर्भर, संघर्ष, समाज, राष्ट्र की रक्षा,विकास

लेख का सार :

समकालीन हिन्दी कवितओं में स्त्री सशक्तिकरण एक महत्वपूर्ण विषय है, जो समाज के हर क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन की माँग करता है। स्त्री सशक्तिकरण में यह ताकत है कि वह समाज और देश में बहुत कुछ बदल सके। वह समाज में किसी समस्या को पुरुषों से बेहतर ढंग से निपट सकती है। वह देश और परिवार के लिए क्या अच्छा है, किस कारण से नुक्सान हो सकता है यह अच्छी तरह से समझ सकती है। भरतीय संस्कृति में स्त्री को शक्ति कहा गया है। सशक्तिकराण भी एक मानसिक आस्था है उसे शक्ति के विचार से ली गयी है।

जहाँ शक्ति ना हो या कम हो वहाँ शक्ति को बढ़ाना ही सशक्तिकरण है। स्त्री को भी कुछ जगह पर दबाया जाता है उसे अबला समझा जाता है, वह अपनी शक्ति को पहचान नहीं पाती थी, इसलिए नारी को सशक्त करने के लिए समकालीन हिन्दी कविताओं में कवि एवं कवयित्रियों ने स्त्री को अबला नहीं सबला और साक्षात शक्ति बताया है। इसी को हम स्त्री सशक्तिकरण कह सकते हैं। समकालीन हिन्दी कवयित्रियों जैसे सीता श्रीवत्सव , अनामिका, कत्यायनी आदि की कविताएँ स्त्रियों के संघर्ष , आत्मनिर्भरता और पितृसत्तत्मक समाज के खिलाफ़ उनकी लडाई को उजागर करती है। इन कविताओं ने न केवल सहित्यिक दृष्टिकोण से बल्कि सामजिक परिवर्तन और जगारूकता लाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। स्त्री सशक्तीकरण समाज के सामने और न्याय की स्थापना की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। स्त्री सशक्तीकरण एक आवश्यक प्रक्रिया है जो समाज के हर क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन की माँग करती है। शिक्षा,आर्थिक स्वतंत्रता, स्वास्थ्य और सुरक्षा, कानूनी अधिकार और सामाजिक दृष्टिकोण में बदलाव लाकर ही हम एक समान और न्यायपूर्ण समाज की स्थापना कर सकते हैं । समकालीन हिन्दी कविताएँ इस दिशा में जागरूकता और प्रेरणा का महत्वपूर्ण स्रोत है, जो समाज में स्त्रियों की स्थिति को सुधारने और उन्हें सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

प्रस्तावना :

आज-कल लोग आगे बढ़ना तो चाहते हैं, परंतु उसके लिए जो क्षमता उनमें होनी चाहिए वह उनमें नहीं है, इसलिए लोगों में स्वायत्ता और आत्मविश्वास के स्तर को बढ़ाने के लिए कुछ उपायों को बनाना बहुत ही अवश्यक है। ताकि वे अपने स्वयं के अधिकार पर कार्य करने केलिए एक जिम्मेदार और स्वनिर्धारित तरीके से अपने हितों का प्रतिनिधित्व कर सके। किसी व्यक्ति, समुदाय या संघटन की आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, शैक्षणिक, लौकिक या आध्यात्मिक शक्ति में सुधार को सशक्तिकरण कहा जाता है।

सशक्तिकरण से तात्पर्य किसी व्यक्ति की उस योग्यता से है जिसमें वह अपने जीवन से जुड़े सभी निर्णय स्वयं ले सके। सशक्तिकरण लोगों को समर्थ करता है। इस कारण से मनुष्य शक्तिहीन तथा प्रभाव की कमी की भावना को दूर करने और अपने संसाधनों को पहचानने और उपयोग करने में सक्षम बनता है। इस तरह मनुष्य मज़बूत और अधिक आत्मविश्वासी बनता है। हर एक काम को करने का आत्मविश्वास उसमें जागता है। चाहे कितना भी जटिल कार्य क्यों न हो वह उसे पूरा करने केलिए आगे आता है।

महिला सशक्तीकरण को बेहद आसान शब्दों में परिभाषित किया जा सकता है कि इससे महिलाएँ शक्तिशाली बनती है जिससे वह अपने जीवन से जुड़े हर फैसले स्वयं ले सकती है और परिवार और समाज में अच्छे से रह सकती है। समाज में उनके वास्तविक अधिकार को प्राप्त करने के लिए उन्हें सक्षम बनाना महिला सशक्तीकरण है। इसमें ऐसी ताकत है कि वह समाज और देश में बहुत कुछ बदल सके। वह समाज में किसी समस्या को पुरुषों से बेहतर ढंग से निपट सकती है। विकास की मुख्यधारा में महिलाओं को लाने के लिये भारत सरकार के द्वारा कई योजनाएँ चलाई गई हैं।

महिला सशक्तिकरण में ये ताकत है कि वह समाज और देश में बहुत कुछ बदल सकें। वह समाज में किसी समस्या को पुरुषों से बेहतर ढ़ंग से निपट सकती है। वह देश और परिवार के लिए क्या अच्छा है, किस कारण से नुकसान हो सकता है यह अच्छी तरह से समझ सकती है। अच्छी योजनाओं से वह देश और परिवार की आर्थिक स्थिति का प्रबंधन करने में पूरी तरह से सक्षम है।

स्त्री सशक्तिकरण : सामाजिक सन्दर्भ :

समाज की ही तरह साहित्य भी गतिशील होता है। साहित्य समाज में हो रहे परिवर्तन का साक्षी होता है। साहित्य समाज का दर्पण है जो समाज में घटती है उसे हम साहित्य में देख सकते हैं। हमारा देश जितना विविध धर्मी है उसी के अनुरूप साहित्य में भी विविधता है। साहित्य का पद्यात्मक रूप ही कविता है। कविता में कवि अपने भावों व विचारों को काव्यात्मक रूप से अभिव्यक्त करता है। उसकी यह अभिव्यक्ति वैयक्तिक होने के साथ-साथ सामाजिक होती है। उसके विचारों और भावों से समाज का मार्गदर्शन होता है। इस प्रकार साहित्य और समाज का अन्यान्य सम्बंध है।

कविता साहित्य का वह रूप है जो व्यक्ति को हृदय से प्रभावित करती है। जब कविता मनुष्य के हृदय को आंदोलित करती है तब समाज में एक आदर्श संबंध स्थापित होते है। मनुष्य का हृदय संकुचित स्वार्थ संबंधों से ऊपर उठकर राष्ट्रीय स्तर पर एकता स्थापित करने का प्रयास करती है। समकालीन कविता की तो अर्थ ही यही है कि आज की कविता, जो अधिक से अधिक जीवन के निकट गई है, वह ज्यादा-से-ज्यादा वंचित समाज से जुड़ी है और इसके लिए उसने प्रतिरोध की ऊर्जा को अपनाया है। आज वह सही अर्थों में 'लोक संस्कृति की अभिव्यक्ति' है। समकालीन कविता में न तो भावावेग है न कल्पना का अतार्किक विस्तार। वह तो जीवन जगत के व्यापार, अनुभवों के सच्चे और ठोस आधारों को अपनाती हैं। अतः समकालीन कविता अपने परिवेशगत यथार्थ की व्यापक अभिव्यक्ति है। अपनी दिशा और दृष्टि में यह नयी पीढ़ी या आजादी के बाद पैदा हुई पीढ़ी की संघर्ष एवं सशक्तिकरण गाथाओं से भरी जीवन की कविता है। ऐसी समकालीन कविता समाज के लोगों को आकर्षित और प्रभावित करती है।

भारतीय संस्कृति में स्त्री को 'शक्ति' कहा गया है। नारी को वैदिक काल से ही उन्नत स्थान दिया गया है और तब नारी के विषय में 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' कहा जाता था। सशक्तिकरण भी एक मानसिक आस्था है उसे शक्ति के विचार से ली गयी है। जहाँ शक्ति न हो या जहाँ कम हो वहाँ शक्ति को बड़ा देना ही सशक्तिकरण है। स्त्री को भी कहने के लिए हर जगह पूजा जाता है और बहुत महत्व दिया जाता है, परंतु कुछ जगह पर उसे दबाया जाता है और अबला समझा जाता है। स्त्री भी उसी तरह से आदिकाल से ही दबी हुई है और अपने आप को अबला ही समझती रही है। वह अपनी शक्ति को पहचान नहीं पाती थी। इसलिए नारी को सशक्त करने के लिए हिंदी साहित्य में स्त्री सशक्तिकरण के बारे में साहित्यकारों ने अपनी

साहित्य में नारी को अबला नहीं सबला बताया है। ऐसा साहित्य जिसमें स्त्री को साक्षात शक्ति है और सबला है कहा गया हो उसी को हम स्त्री सशक्तिकरण कह सकते हैं।

संघर्ष और आत्मनिर्भरता :

समकालीन कविताएँ महिलओं के संघर्ष, उनकी चुनौतियाँ और उनकी आत्मनिर्भरता की कहानियों को प्रस्तुत करती है। सीता श्रीवास्तव जी की कविता 'अपनी लड़ाई स्वयं ही लडनी है' में उन्होंने स्त्री को सशक्त और आत्मनिर्भर बनने का संदेश देते हुए कहते हैं-

"तुम्हें अपनी लड़ाई स्वयं ही लडनी है अपना रास्ता स्वयं ही खोजना है तुम्हें ये
कठिन समस्याएँ जिनसे जिंदगी के हर मोड़ पर जूझ रहे हो इनका समाधान ढूँढना है, तुम्हें
ही कहाँ सहारा ढूँढ रहे हो अपना सहारा तो बनना है स्वयं तुम्हें ही।"1

प्रस्तुत कविता में दिखाया गया है कि कैसे महिलाएँ समाज की पितृ सत्तात्मक संरचना के खिलाफ़ खडी होके अपनी लडाई खुद लडकर अपनी पहचान बना रही है। समकालीन कविताओं को अगर हम देखेंगे तो सिर्फ स्थितियों का वर्णन ही नहीं हालात को बदलने की एक आवाज़ भी सुनायी देगी। इसलिए कई बार हम कविताओं में इसे देख सकते हैं।

“कोमल है, कमज़ोर नहीं तू।
शक्ति का नाम ही नारी है ॥
जग को जीवन देनेवाली।
मौत भी तुझसे हारी है ॥"2

उपर्युक्त कविता में इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि स्त्री को सबला और शक्तिशाली बनना है। सार रूप में कहा जा सकता है कि सशक्तिकरण एकमानसिक आस्था है, उसे 'शक्ति' के विचार से ली गई है। स्त्री साक्षात शक्ति है, सबला है। समाज के स्त्री विषयक सोच के ये दो परस्पर विरोधी प्रतीत होनेवाली पक्ष है, जो मूलतः सशक्त है, इसलिए स्त्री सशक्तिकरण को एक प्रक्रिया के रूप में स्वीकार करने की आवश्यकता है। स्त्री

1 पृ.सं. 50: सीता श्रीवास्तव : अपनी लड़ाई स्वयं ही लड़नी है

2 पृ.सं. 05: मॉड्यूल-,11 महिला विकास एवं सशक्तिकरण

सशक्तिकरण एक बहु आयामी चुनौती है। वास्तव में स्त्री स्वयं एक बहु आयामी व्यक्तित्व है। भारतीय समाज में नारी का स्थान पूजनीय रहा है। वह कभी बेटी के रूप में, कभी बहन के रूप में, कभी पत्नी एवं प्रेमिका के रूप में, इस प्रकार महिलाएँ कई रूपों में जीवन व्यतीत करते हुए एक सभ्य एवं सुसंस्कृत समाज की निर्माण प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पुरुषों में व्याप्त सभी गुणों के अतिरिक्त उनमें बहुत से विशेष गुण विधमान है। इन्हीं गुणों के कारण वहसामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक, धार्मिक आदि क्षेत्रों में सबला बन रही है। महिला - वह शक्ति है, सशक्त है, वह भारत की नारी है, न ज्यादा में, न कम में, वह सब में बराबर की अधिकारी है। चाहे खेल हो या अंतरिक्ष विज्ञान, हमारे देश की महिलाएँ किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं हैं। वे कदम से कदम मिला करआगे बढ़ रही हैं और अपनी उपलब्धियों से देश का नाम रौशन कर रही हैं।

सामाजिक स्वतंत्रता और समानता :

कई कविताएँ महिलओं की स्वतंत्रता और समानता के अधिकार की बात करती है। यह कविताएँ महिलओं के लिए स्वतंत्र सोच , निर्णय लेने की स्वतंत्रता और जीवन के हर क्षेत्र में समान अवसर की माँग करती है। महिला ने अपने संघर्ष के बल पर अनेक अधिकारों को हासिल कर चुकी है। इन सबके बावजूद समाज, समुदाय व राज्य में स्त्री-पुरूष भेदभाव चलता रहता है। महिला कभी-कभी सोचती है कि इस देह के कारण उसे हर जगह पर लिंग भेद के बुरे अनुभवों से गुज़रना पड़ता है, न्याय और नियम भी इसे रोक नहीं पाता है। तभी कवयित्री कहती है कि-

"यह मेरा संघर्ष,
तुमसे नहीं
अपने आपसे है।"3

उपर्युक्त कविता में अनामिका जी कहना चाहती है कि यह स्त्री का अपना संघर्ष है उसे अपनी लड़ाई खुद लड़कर अपने जीवन में आगे बढ़ना होगा। हमें समाज में ही नहीं, बल्कि परिवार के भीतर भी महिलाओं और पुरुषों के बीच भेदभाव को रोकना होगा। महिलाओं को खुद से जुड़े फैसले लेने की स्वतंत्रता होनी चाहिए - सही मायने में हम तभी नारी सशक्तिकरण को सार्थक कर सकते हैं। महिला में आत्मविश्वास जागृत होता है

3 पृ.सं. 70: अनामिका : अनुष्टुप

तो वह अपनी क्षमता से बढ़कर काम करती है। हर एक काम में अपना नेतृत्व लेकर सशक्त रूप से कार्य करती है। कात्यायनी जी अपनी कविता में कहती है कि-

'अभी भी मैं जीवित रहना चाहती हूँ
नहीं यह कहना उचित होगा कि,
अब मैं जीवित होना चाहती हूँ, दुर्गपति,
मैं अपनी पहचान तक जाना चाहती हूँ
अपनी आत्मा तक
अपनी अस्मिता तक जाना चाहती हूँ मैं ॥'4

उपर्युक्त कविता में कात्यायनी जी ने समाज में रहनेवाली पुरूष वर्चस्व की बात को दिखाया है। इस कविता का वातावरण ऐतिहासिक होते हुए भी हम इसे आज के परिवेश में जोड़ सकते हैं। पूरी कविता नगरवधू के अनुरोध के रूप में रचित है परन्तु हम यहाँ सशक्तिकरण की भावना को देख सकते हैं। समाज के परंपरा से ऊपर उठकर एक स्त्री सभी खोखलेपन से मुक्ति चाहती है। अपनी अस्मिता को पाना चाहती है। स्त्री जब समाज में अपनी पहचान पाना और अपनी अस्मिता को पहचानने की कोशिश करते हुए अपने अधिकार के लिए लड़कर उसे हासिल करती है तब केवल एक स्त्री ही नहीं बल्कि समाज भी सशक्त होती है |

आर्थिक स्वतंत्रता :

नारी सशक्तिकरण में आर्थिक स्वतंत्रता की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। चाहे वह शोध से जुड़ी गतिविधियाँ हो या फिर शिक्षा क्षेत्र, महिलाएँ काफी अच्छा काम कर रही हैं। कृषि के क्षेत्र में भी महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान है। प्रत्येक महिला में उद्यमिता के गुण और मूल्य होते हैं। यदि वे आर्थिक रूप से स्वतंत्र हो तो महिलाएँ निर्णय प्रक्रिया में बड़ी भूमिका अदा कर सकती हैं। नारी जब शिक्षित होती है तो केवल दो परिवार ही नहीं बल्कि दो पीढ़ियाँ शिक्षित बन जाती हैं।

"अक्षर के जादू ने
उस पर असर बड़ा बोजोड़ किया
चुप रहना छोड़ दिया,
लड़की ने डरना छोड़ दिया
हँसकर पाना सीख लिया

4पृ.सं. 47: एक भूतपूर्व नगरवधू की दुर्गपति से प्रार्थना – कात्यायनी, दीर्घ कविताएँ

रोना पछताना छोड़ दिया

घुट घुट कर अब नहीं मरेगी,

मंच पे चढ़कर बोलेगी

समय और शिक्षा ने

उसके चिंतन का रूख मोड़ दिया ॥"5

प्रस्तुत कविता में कवि ने नारी की शैक्षणिक सशक्तिकरण के बारे में बताया है । उनका मानना है कि शिक्षण के कारण स्त्री के मन में एक नया आत्मविश्वास जगा है । शिक्षण के कारण वह दुनिया के हर एक कोने में जाकर काम कर पा रही है । नारी आज सही मायने में हर जगह पर अपना नाम कमा रही है तो वह शिक्षण के कारण ही है । शिक्षा की वजह से आज नारी सशक्त होकर हर मुश्किलों का सामना करकर अपना राह खुद तय कर रही है । नारी सशक्तिकरण के कारण ही आज देश भी आगे बढ़ रहा है ।

निष्कर्ष :

महिला सशक्तीकरण के बिना मानवता का विकास अधूरा है । इस बात को ध्यान में रखते हुए हमारे सरकारने'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओं', 'उज्ज्वला', 'नारी शक्ति पुरस्कार', ' महिला शक्ति केंद्र ', 'निर्भया' आदि योजनाओं कोशामिल कर चुके हैं । आज की महिलाएँ सिर्फ घर गृहस्थी को सम्भालने तक ही सीमित नहीं रहीं है बल्कि गृहणी से लेकर एक सफल व्यवसायी की भूमिका को सहज ढ़ंग से निभा रही है । व्यावसायिक क्षेत्र हो या पारिवारिक, महिलाओं ने यह साबित कर दिया है कि वे हर काम कर सकती है जो कभी पुरुषों के योग्य समझा जाता था। आज नारी स्वयं को पुरुषों से बेहतर साबित करने का एक भी मौका गंवाना नहीं चाहती । वह खुद में छिपी ताकत को पहचान कर अपना स्वतंत्र अस्तित्व निर्माण करने का प्रयास करती है, शिक्षित और आत्मनिर्भर बन जाने के कारण वह अपने ऊपर विश्वास कर अपने जीवन संबंधी निर्णयों को पुरुषों से ज्यादा बेहतर तरीके से लेने की काबिलियत रखती है । आधुनिक नारी राम के वेश में छिपे रावण को पहचान कर उसे बेनक़ाब करने की काबिलियत भी रखती है । समाज में हर एक क्षेत्र में अपनी मेहनत और काबिलियत के बल पर नारी ने अपनी एक अलग पहचान बनाई है । इस प्रकार स्त्री सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक आदि हर क्षेत्र में अपना पहचान बनाके अपने आपको सशक्त और आत्मनिर्भर बनकर सदियों से चले आ रहे उत्पीड़न व भेद-भाव समाप्त कर एक ऐसी समाज की स्थापना कर पाई है, जिसमें सबको बराबर का अधिकार मिले । आजकल

5 पृ.सं. ४८: श्यौराज सिंह 'बेचैन': क्रौंच हूँ मैं

समाज में हो रहे बदलाओं के कारण नारी के भीतर एक नया उमंग जागी है, वह जागरूक और आत्मनिर्भर होती दिखाई पड़ रही है। इससे समाज और देश का भी विकास हो रहा है।

संदर्भ सूची:

1) काव्य सुषमा (बी.ए/बी.एससी पाठ्यक्रम हेतु), बोर्ड चेयरपर्सन, डॉ.गिरिजा कुमारी.आर, संपादिका डॉ.सुषमा, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली- 110006, 2018।
2) "अनामिका की कविताओं में स्त्री विमर्श"- सुनिता बिष्ट, Journal of Acharya Narendra Dev, Research Institute, ISSN: 0976-3287, Vol-28 (Jun-2019-Aug-2019)।
3) विशेषांक- "समकालीन हिन्दी साहित्य और विमर्श", BY- GINA JOURNAL 43, 'नारी विमर्श अनामिका की कविताएँ'- अनामिका, अनामिका शिल्प, ISSN: 2321-8037
4) "हिन्दी साहित्य में नारी चेतना"- Dr.Hemalatha Sharma, Asst.Prof., JCMM-Assandh Dist., Karnal, Haryana, India, ISSN: 2230-7540, January-2012
5) "समकालीन भारतीय दलित महिला लेखन"- सं.रजनी तिलक, रजनी अनुरागी, स्वराज प्रकाशन, दिल्ली- 2011
6) महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में महिला एवं बाल विकास विभाग के योगदान का मूल्यात्मक अध्ययन (छ.ग.के राजनाद गाँव जिला के विशेष संदर्भ में)।
7) काव्य मंगल, संपादक डॉ.एस.ए. मंजुनाथ, लोकभारती प्रकाशन
8) महिला विकास एवं सशक्तिकरण, मॉड्यूल-11, प्रथम संस्करण- 2016, समाजकार्य स्नातक पाठ्यक्रम (द्वितीय वर्ष), महात्मा गाँधी, चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट जिला- सतना (मध्यप्रदेश)- 485334।
9) बेचैन: क्रौचे हूँ मैं, श्योराज सिंह
10) दीर्घ कविताएँ, संपादक डॉ.प्रभाकर सिंह, अरुणोदय प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2020

****